International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED), ISSN: 2320-8708
Vol. 2 Issue 6, Nov.-Dec., 2014, pp: (105-110), Impact Factor: 1.267, Available online at: www.erpublications.com

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्य समाज का योगदान

मुकेश कुमार
लेक्चरर (इतिहास), गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल, कसार, झज्जर

परिचय

वैदिक संस्कृति के विकृत होने के बाद भारतीय समाज घोंघे की भाँति सिकुड़ता चला गया और अपनी इसी संकीर्ण तथा परस्पर वैमनस्यता के कारण भारत एक के बाद एक आये विदेशी आक्रान्ताओं से पराजित होता गया। व्यापारी बन कर आये अंग्रेज हमारे देश की परस्पर फूट का लाभ उठा कर यहाँ शासक बन बैठे और हमको हेय समझने लगे। सन 1857 ई. का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम लार्ड कैनिंग की अत्याचार कैंची से कुतर-बोंत कर दिया गया था, जिसमें पंजाब के सिखों , ग्वालियर के सिंधिया, भोपाल की बेगम और नेपाल के गोरखों, हैदराबाद के सर सालार जंग बहादुर ने देश भक्तों को कुचलने में विदेशी शासकों का साथ दिया था। विदेशी शासन की इस लम्बी अवधि में भारतीयों का नैतिक, सामजिक और आध्यात्मिक पतन पराकाष्ठा को पार कर चुका था। सत्य के स्थान पर असत्य,धर्म के नाम पर ढोंग व पाखण्ड का बोल-बाला था। वेदों का ज्ञान संकुचित कर दिया गया था। स्त्रियों एवं शूद्रों (मेहनतकशों) को वेद पढने का अधिकार न था. ऐसे ही विकृत समय में युगांतरकारी महर्षि दयानंद सरस्वती का आविर्भाव हुआ. एक कवि के शब्दों में-

धरा जब-जब विकल होती, मुसीबत का समय आता।

किसी न किसी रूप में, कोई न कोई महामानव चला आता।

अपनी युवावस्था में ही महर्षि दयानंद ने सम्पूर्ण राष्ट्र का परिभ्रमण कर जाग्रति की धारा बहा दी , जागरण का सिंहनाद फूंक दिया , वेदों के अपौरुषेय ज्ञान का प्रतिपादन करते हुए कण-कण में दुर्धर्ष शक्ति का मन्त्र फूंक दिया और पाखंडों अंधविश्वासों , गुरुदम का अपनी अतर्क्य तर्क-शक्ति का प्रचंड विद्वता के माध्यम से कठोर प्रहार करते हुए सन 1857 ई. में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को मुम्बई में 'आर्य समाज 'की स्थापना की ।

कांग्रेस के जन्म से भी दस वर्ष पूर्व आर्य समाज के माध्यम से महर्षि दयानंद ने स्वराज्य का प्रथम उद्घोष कर दिया था। 26 फरवरी,1883 ई. को संपन्न 'सत्यार्थ प्रकाश'में उन्होंने लिखा है कि, माता-पिता के समान होने पर भी विदेशी राज्य स्वराज्य की बराबरी नहीं कर सकता। ध्यान देने की बात यह है - इस समय तक कांग्रेस की भी स्थापना नहीं हुयी थी और तथाकथित हिन्दू महासभा, आर.एस.एस., मस्लिम लीग आदि का कोई अत-पता भी न था। बंग-भंग आन्दोलन से भी बहुत पूर्व स्वामी जी ने स्वदेशी वस्तुओं का स्वंय व्यवहार करके तथा दूसरों को भी ऐसा ही आग्रह करके स्वदेशी आन्दोलन को जन्म दिया था। महर्षि दयानंद के प्रिय शिष्य क्रांतिवीर श्याम जी कृष्ण वर्मा उनकी अनुमति लेकर लन्दन चले गए और वहां उन्होंने 'इण्डिया हाउस ' की स्थापना की और 'इन्डियन सोशियोलाजिस्ट 'नामक पात्र निकाल कर विदेशी शासकों की धरती पर ही उसे उखाड़ फेंकने का आह्वान कर शेर को उसकी मांद में ही चुनौती दे डाली। महर्षि दयानंद की प्रेरणा और आशीर्वाद ही श्याम जी कृष्ण वर्मा के मुख्य सिम्बल थे। कुछ ही समय में लन्दन का इण्डिया हाउस क्रांतिकारियों का अखाड़ा बन गया । जहाँ शरण लेने वालों में जलियाँ वाला काण्ड के नर-पिशाच जनरल डायर का वध करने वाले सरदार ऊधम सिंह का नाम विशेष उल्लेखनीय है। सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन द्वारा ही काकोरी काण्ड के

अमर शहीद राम प्रसाद 'बिस्मिल'ने शाहजहांपुर में 'आर्य कुमार सभा'की स्थापना कर बच्चों व नव-युवकों में समाज व देश सेवा का शंखनाद फूंक डाला था। आर्य कुमार सभा रूपी बिस्मिल की इसी फैक्टरी में अशफाक उल्ला खां,ठाकुर रोशन सिंह आदि देशभक्त नौजवान तैयार हुए थे, इसी लिए दिसंबर 1927 ई. में उनकी फांसी के पश्चात देश में यह नारा गूँज गया था –

मरते बिस्मिल, रोशन, लाहिड़ी, अशफाक अत्याचार से , होंगे सैंकड़ों पैदा इनके खून की धार से …

आर्य सन्यासी स्वामी सोमदेव जी तथा डी.ए.वी.स्कूल इटावा के शिक्षक क्रांतिकारी गेंदा लाल दीक्षित ने तो क्रांतिकारी युवकों की एक फ़ौज ही खड़ी कर डी थी जो छल व बल से स्थापित ब्रिटिश साम्राज्य को उखाड़ फेंकने को कृत -संकल्प थी। पंजाब के क्रांतिकारी लाला हरदयाल (जो माथुर कायस्थ) तथा परमानंद, सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद आदि आर्य समाजी ही थे। अंग्रेज सरकार आर्य समाज को एक राजद्रोही आन्दोलन ही समझती थी जैसा कि, सर वेलेंटाईन शिरोल ने "इन्डियन अनरेस्ट " नामक पुस्तक में स्वीकार भी किया है। "एवरीमैन"के विश्वकोश में तो आर्य समाज को स्पष्ट रूप से एक ऐसा राजद्रोही संगठन कहा है जिसका उद्देश्य देश की आजादी रहा है। ब्रिटिश शासक स्वामी दयानंद को रिवोल्यूशनरी सैन्ट कहा करते थे।

ऐसा नहीं है कि आर्य समाज ने स्वतन्त्रता आन्दोलन को सिर्फ क्रांतिकारी ही भेंट किये हों, वरन लाला लाजपतराय, श्रद्धानंद सरीखे आर्य नेता और असंख्य आर्य समाजी गांधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन में जेल गए थे। डा. पट्टाभि सीतारमैया ने "कांग्रेस का इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा है कि, स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने वाले कांग्रेसियों में 85 प्रतिशत आर्य समाजी थे। वास्तव में गांधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन को जन-आन्दोलन बनाने में आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गांधी जी के आन्दोलन को पिछड़ों, दलितों व महिलाओं का योगदान सिर्फ इसी लिए मिल सका कि, आर्य समाज ने डी.ए.वी.स्कूलों के माध्यम से शिक्षा का प्रसार कर युवकों को जाग्रत कर दिया था, कन्या पाठशालाओं और कन्या गुरुकुलों को खोल कर महिलाओं को पुरुषों से भी श्रेष्ठ अर्थात मातृ-शक्ति घोषित कर दिया था। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद की ही दूर- दर्शिता थी कि उन्होंने हिन्दी को राष्ट्र -भाषा घोषित कर दिया था जिसका अनुसरण महात्मा गांधी ने किया और इस प्रकार जन-जन तक सत्याग्रह का सन्देश सरलता से पहुंचाया जा सका। दलितों को न केवल पढने बल्कि वेदों को पढ़ने का भी अधिकार आर्य समाज ने ही प्रदान किया और इस प्रकार उन्हें मुख्य धारा में जोड़ कर स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने की प्रेरणा प्रदान की।

निष्कर्ष यही है कि, महर्षि दयानंद तथा उनके आर्य समाज ने अपने क्रांतिकारी कार्यक्रमों के माध्यम से भारत की सोयी हुयी तरुणाई को जगा कर माँ की बलिवेदी पर समर्पण हेतु कटिबद्ध किया जिसके आधार पर भारत की स्वाधीनता का महान संग्राम अनवरत लड़ा गया और अन्तोगत्वा भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्र हुआ। आर्य समाज से ही प्रेरणा पा कर युवकों ने स्वतन्त्रता संग्राम के यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दी, एक कवि के शब्दों में -

देश हित वार दीं, अनेक ही जवानियाँ.

जिनके खून से लिखी ,स्वदेश की कहानियां..

आर्य समाज

19वीं सदी के सुधारवादी आन्दोलनों में आर्य समाज अपना प्रमुख स्थान रखता है। इसकी स्थापना 10 अप्रेल, 1875 ई को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बम्बई में की थी। वह वैदिक धर्म पर आधारित था। स्वामी दयानन्द के अवतीर्ण होने से पूर्व हिन्तुत्व जर्जर हो चुका था एवं उसमें अनेक आडम्बरों, कर्मकाण्डों एवं रूढ़ियों ने प्रवेश कर लिया था। ईसाई और इस्लाम धर्म प्रचारक हिन्दू धर्म का खुला उपहास उड़ा रहे थे एवं अपने धर्म का प्रचार कर रहे थे। केशवचन्द्र सेन के ब्रह्म समाज का झुकाव भी ईसाई धर्म की तरफ था।

इन परिस्थितियों में दयानन्द ने हिन्दू धर्म में व्याप्त बुराईयों को दूर करते हुए हिन्दुओं का ध्यान उनके धर्म के मूल स्वरूप की ओर आकृष्ट किया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि भारतीय संस्कृति विश्व की श्रेष्ठतम् संस्कृति है। उनकी धारणा थी कि हिन्दू धर्म ही सच्चा धर्म है तथा वेद ज्ञान के भण्डार है। स्वामी दयानन्द का मानन था कि यदि वैदिक धर्म की बुराइयों को दूर कर उसे पुनः प्रतिष्ठित किया जाए , तो भारत पुनः विश्व का गुरू बनने में सक्षम है। इस प्रकार जहाँ राजा राममोहन राय का झुकाव ईसाई धर्म की तरफ था , वहीं स्वामी दयानन्द का झुकाव हिन्दू धर्म की तरफ था। उन्होंने हिन्दू धर्म में एक नए प्राण फूंक दिए। रोमा रोलां के शब्दों में , दयानन्द इलियड् अथवा गीता के प्रमुख वाचक के समान थे, जिसने हरक्युलिस की शक्ति के साथ हिन्दू अन्धविश्वासों पर प्रबल प्रहार किया। वस्तुतः शंकराचार्य के बाद इतनी महान् बुद्धि का सन्त दूसरा नहीं जन्मा। रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार, स्वामी दयानन्द सरस्वती आधुनिक भारत के एक महान् पथ-प्रदर्शक थे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824-1883 ई.)

स्वामी दयानन्द सरस्वती जन्म 1824 ई. में गुजरात के मोरवी क्षेत्र में निकट टंकरा नामक गाँव में एक धनी तथा रूढ़िवादी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके बचपन का नाम मूलशंकर था। उनके पिता का नाम अम्बाशंकर था। 14 वर्ष की आयु में एक बार महाशिवरात्रि के पर्व पर अपने पिता के साथ शिव के मन्दिर में गए वहाँ उन्होंने एक चूहे को शिवलिंग पर चढ़कर प्रसाद खाते हुए देखा। यह देखकर मूर्तिपूजा पर से उनका विश्वास उठ गया। जब उनके पिता 15 वर्ष की आयु में उनका विवाह करने लगे, तो वह घर छोड़कर भाग गए। इसके बाद वे 15 वर्ष तक सम्पूर्ण देश में घूमते रहे। 1860 ई. में उन्होंने मथुरा आकर स्वामी विरजानन्द को अपना गुरू बनाया तथा वेदों का ज्ञान प्राप्त किया। इसके बाद अपने गुरू के आदेश के अनुरूप इन्होंने आजीवन वैदिक धर्म में व्याप्त बुराइयों को दूर करने एवं वैदिक संस्कृति की श्रेष्ठता स्थापित करने का प्रयत्न किया।

ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य के अनुनय विनय करने पर स्वामी पूर्णानंद सरस्वती ने उनका सन्यास संस्कार कराया और उनका नाम दयानंद सरस्वती रख दिया।

जहाँ राजा राममोहन राय पर पाश्चात्य संस्कृति एवं अंग्रेजी भाषा का प्रभाव था , वहीं स्वामी दयानन्द सरस्वती हिन्दू धर्म एवं भारतीय संस्कृति से बहुत प्रभावित थे। उनका उद्देश्य हिन्दू धर्म में व्याप्त बुराइयों को दूर करते हुए एक बार पुनः उसकी श्रेष्ठता स्थापित करना था। उन्होंने मूर्तिपूजा का डटकर विरोध किया। वेदों में आस्था होने के कारण उन्होंने वेदों की तरफ लौटो का नारा दिया। उन्होंने सम्पूर्ण देश का भ्रमण कर हिन्दू धर्म का प्रचार किया तथा विभिन्न विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित किया। आर्य समाज ने नमस्ते शब्द प्रचलित किया जो आज भी अपनेपन का एहसास दिलाता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती संस्कृत के महान विद्वान थे। बाद में उन्होंने ब्रह्म समाज के साथ मिलकर कार्य करने का प्रयत्न किया, किन्तु प्रयत्न विफल रहा , क्योंकि ब्रह्म समाज के सदस्यों का वेदों की प्रामाणिकता तथा पुनर्जन्म के सिद्धान्त में कोई विश्वास नहीं था एवं उनका झुकाव पाश्चात्य संस्कृति तथा ईसाई धर्म की तरफ था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने केशवचन्द्र सेन के परामर्श पर संस्कृत भाषा के स्थान हिन्दी भाषा में अपने विचारों का प्रचार करना आरम्भ कर दिया। स्वामीजी ने 10 अप्रेल, 1875 ई. को बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। यहाँ से दिल्ली गए , जहाँ सत्य की खोज हेतु हिन्दू, ईसाई एवं मुस्लिम धर्म प्रचारकों का सम्मेलन बुलाया गया था। इस सम्मेलन में दो दिन तक वाद - विवाद होता रहा, किन्तु सम्मेलन किसी निर्णय पर न पहुँच सका। स्वामी जी ने इसके बाद पंजाब में जाकर अपने विचारों का प्रचार किया। इसके परिणामस्वरूप पंजाब में स्थान -स्थान पर आर्य समाज की शाखाएँ स्थापित हुए। इसके बाद वे ग्वालियर, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात आदि स्थानों पर आर्य समाज का प्रसार किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने तीन ग्रन्थों की रचना की :

1. प्रथम ग्रन्थ ऋग्वेदादि भाष्य में उन्होंने वेदों के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किए।
2. द्वितीय ग्रन्थ में वेद भाष्य में उन्होंने ऋग्वेद तथा यजुर्वेद के सम्बन्ध में टीका लिखी।
3. स्वामी दयानन्द का तीसरा ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश था, जो बहुत अधिक प्रसिद्ध है।

इस ग्रन्थ में उन्होंने सभी धर्मों के दोषों पर प्रकाश डालते हुए यह प्रामाणित करने का प्रयत्न किया है कि वैदिक धर्म ही सभी धर्मों श्रेष्ठ है। इसमें उन्होंने इस्लाम तथा ईसाई धर्म के आडम्बरों तथा कर्मकाण्डों की भी खुलकर आलोचना की है। इससे हिन्दू इन धर्मों के दोषों से परिचित हुए तथा वे समझ गए कि ये धर्म हिन्दू धर्म से श्रेष्ठ नहीं है। इससे हिन्दुओ का विश्सास इन धर्मों से उठने लगा तथा पुनः हिन्दू धर्म की तरफ आकर्षित होने लगा। उन्होंने ईसाई एवं इस्लाम धर्म की श्रेष्ठता पर पानी फेर दिया। यह उनकी महान् देन थी। डॉ . ताराचन्द ने लिखा है कि, दयानन्द को आपत्ति तो इस बात पर थी कि इस्लामी और ईसाई तत्त्व हिन्दू धर्म पर आक्रमण करने से बाज नहीं आ रहे थे और इसलिए अपने धर्म के बचाव में उन्होंने प्रत्याक्रमण के शस्त्र का सहारा लिया, ताकि हिन्दू धर्म पर हमले के बजाय उन्हें अपनी स्थिति बचाने की फिक्र हो। एम.ए. चमूपति ने लिखा है कि, मुल्लाओं और पादरियों ने पहली बार यह अनुभव किया कि उनके विश्वास की बिना किसी संकोच के आलोचना हो सकती है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का अन्तिम समय राजस्थान में व्यतीत हुआ। उनके उपदेशों से प्रभावित होकर यहाँ के अनेक राजा तथा सामन्त उनके भक्त बन गए। उनके राजनीतिक विचार बड़े उँचे थे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि , विदेशी राज्य से स्वराज्य हर प्रकार से अच्छा है। स्वामी जी ने जोधपुर के व्यसनी नरेश महाराज जसवन्तसिंह को खूब लताड़ा था, अतः महाराज की कृपापात्र नन्हीं जान ने स्वामी जी के भोजन में विष मिला दिया, जिसके कारण 30 अक्टूबर 1883 ई. को स्वामी जी की अजमेर में मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के सम्बन्ध में मादाम ब्लोवाट्स्की ने लिखा था कि , यह बिल्कुल सही बात है कि शंकराचार्य के बाद भारत में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ जो स्वामी जी से बडा संस्कृतज्ञ, उनसे बड़ा दार्शनिक , उनसे अधिक तेजस्वी वक्ता तथा कुरीतियों पर टूट पडने में उनसे अधिक निर्भीक रहा हो। दी थियोसोफिस्ट ने स्वामी जी की मृत्यु के बाद प्रशंसा में लिखा था कि , उन्होंने जर्जर हिन्दुतव के गतिहीन जन -समूह पर भारी बम प्रहार किया और अपने भाषणों से लोगों के हृदय में आग लगा दी। सारे भारत वर्ष में उनके समान हिन्दी और संस्कृत का वक्ता दूसरा कोई नहीं था। पाल रिचार्ड ने लिखा है कि , स्वामी दयानन्द निःसन्देह एक ऋषि थे। उनका प्रादुर्भाव लोगों को कारागार से मुक्त करने और जाति बन्धन तोड़ने के लिए हुआ था। मैक्समूलर ने लिखा है कि , स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म के सुधार का बड़ा कार्य किया। जहां तक समाज सुधार का सम्बन्ध है , वे बड़े उदार हृदय थे। वे अपने विचारों को वेदों पर आधारित और उन्हें ऋषियों के ज्ञान पर अवलम्बित मानते थे।

इन्होंने वेदों पर बड़े-बड़े भाष्य किए, जिससे मालूम होता है कि वे पूर्ण विद्वान थे। उनका स्वाध्याय बड़ा व्यापक था। रोमा रोला ने लिखा है कि, ऋषि दयानन्द उच्चतम् व्यक्तित्व के पुरूष थे। दयानन्द ने अपहव व अछूतपन के अन्याय को सहन न किया और उससे अधिक उनके अपहयत अधिकारों का उत्साही समर्थक दूसरा कोई न हुआ। भारत में स्त्रियों की शोचनीय दशा को सुधारने में भी दयानन्द ने बड़ी उदारता व साहस से काम लिया। वास्तव में राष्ट्रीय भावन और जाग्रति के विचार को क्रियात्मक रूप देने से सबसे अधिक प्रबल शक्ति उन्हीं की थी। वह नव-निर्माण और राष्ट्रीय संगठन की जो मशाल जलाई थी, उसका कोई जवाब नहीं था। वे जो कुछ कर रहे थे , उसका उत्तर न तो मुसलमान दे सकते थे , न ईसाई, न पुराणों पर पलने वाले हिन्दू पण्डित और विद्वान। हिन्दू पुनर्जागरण अब पूरे प्रकाश में आ गया था और उनके समझदार लोग यह अनुभव करने लगे कि सच ही पौराणिक धर्म में कोई सार नहीं है। एर्मसन ने लिखा है , यह स्वीकार महत्त्वपूर्ण है। उनकी मान्यताओं और सिद्धान्तों ने एक बार तो हीनभाव ग्रस्त इस जाति को अपूर्व उत्साह से भर दिया।

श्री ए. ओ. ह्यूम ने लिखा है , स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों के विषय में कोई मनुष्य कैसी ही सम्मति स्थिर कर ले , परन्तु वह सबको मान लेना पड़ेगा कि स्वामी दयानन्द अपने देश के लिए गौरव रूप थे। दयानन्द को खोकर भारत को महान् हानि उठानी पड़ी है। वह एक महान और श्रेष्ठ मनुष्य थे। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने लिखा है, महर्षि दयानन्द के उपदेशों ने करोड़ों लोगों को नवीजनव, नई चेतना और नया दृष्टिकोण प्रदान किया। उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हमें व्रत लेना चाहिए कि उनके बताए हुए मार्ग पर चलकर हम देश को शान्त और वैभवपूर्ण बनाएँगे। डॉ . राधाकृष्ण ने लिखा है कि , स्वामी दयानन्द एक महान् सुधारक और प्रखर क्रांतिकारी महापुरूष तो थे ही, साथ ही उनेक हृदय में सामाजिक अन्यायों को उखाड़ फेंकने की प्रचण्ड अग्नि भी विद्यमान थी। उनकी शिक्षाओं का हम सबके लिए भारी महत्त्व है। उन्होंने हमे यह महान संदेश दिया हि हम सत्य को कसौटी पर कसकर ही किसी बात को स्वीकार करे।

आर्य समाज के सिद्धान्त

स्वामी दयान्नद सरस्वती ने अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में आर्य समाज के 10 सिद्धान्तों का वर्णन किया है , जो इस प्रकार हैं-

1. ईश्वर ही ज्ञान का मुख्य कारण है। सभी सत्य , विद्या एवं जो पदार्थ विद्या से जाने जाते है , उन सबका मूल कारण परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्द, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, न्यायकारी, अजन्मा, दयालु, अनादि, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, सृष्टिकर्ता एवं निर्विकार है। हम सभी को उसकी भक्ति व उपासना करनी चाहिए।
3. वेद ज्ञान के भण्डार हैं। अतः प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह वेदों को पढ़ें और सुने।
4. असत्य का त्याग करने तथा सत्य को ग्रहण करने हेतु सदैव तैयार रहना चाहिए।
5. सबसे धर्मानुसार, प्रेमपूर्वक एवं यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए।
6. विद्या का सृजन एवं अविद्या का नाश करना चाहिए।
7. सभी कार्य सत्य एवं असत्य पर विचार करके ही करने चाहिए।
8. समाज का उद्देश्य सभी व्यक्तियों की शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति के लिए प्रयत्ना करना है।
9. प्रत्येक व्यक्ति को अपनी उन्नति से सन्तुष्ट न रहते हुए दूसरों की उन्नति को भी अपनी उन्नति समझना चाहिए।
10. व्यक्तिगत हित सम्बन्धी कार्यों में सभी व्यक्तियों को स्वतन्त्रता होनी चाहिए। किन्तु सार्वजनिक हित सम्बन्धी विषयों पर आपसी मतभेद भुलाकर परस्पर सहयोग से कार्य करना चाहिए।

निष्कर्ष

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब–जब भारतीय आध्यात्मिक नेताओं ने समाज को झंझोरा है तब–तब क्रांति की एक नई विचारधारा प्रवाहित हुई है। जब स्वामी दयानंद ने समाज मे आर्य समाज का शंखनाद किया तो उनके नाद के सामने बड़े–बड़े धर्म के ठेकेदार, पाखंडी एवं अंग्रेजी शासन की चूलों तक हिल गई थी। भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम हिन्दू धर्म के महर्षियों द्वारा किया गया । एक तरफ जहां आर्य समाज ने समाज में फैली कुरीतियों के माध्यम से लोगो मे जागरूकता पैदा कर रहा था वहीं दुसरी ओर स्वामी विवेकानंद हिंदू धर्म का डंका बजा रहे थे। जब भी हिंदू समाज पर कोई संकट आया है तो भारतीय महर्षियों ने जमकर मुकाबला किया है।

आर्य समाज ने हिन्दुओं मे जहां जागृति उत्पन की वहीं दूसरी और उन्होनें उन नेताओं को जन्म दिया जो आगे चलकर देश की आजादी के कर्णधार बने। जिस आधार पर कांग्रेस पार्टी खड़ी हुई । उसी आर्य समाज के

आधार पर आज की भारतीय जनता पार्टी खड़ी है। वी.डी. सावरकर जो कि आर्य समाज का प्रमुख नेता था उसी की विचारधारा पर भारतीय जनता पार्टी खड़ी हुई है। श्याम जी कृष्ण वर्मा ने भारतीय को अंग्रेजी दासता से मुक्ति दिलाने के लिए विदेशों मे बड़ा आधार तैयार किया वही लाला हरदयाल जैसे आर्य समाजी नेताओ ने अमेरिका मे गदर पार्टी की स्थापना करके भारतीयो मे आजादी के लिए लड़ने का नया जज्बा फूंका।

जिस स्वदेशी अभियान को लेकर महात्मा गांधी ने बड़ा आंदोलन किया। दरअसल वह आर्य समाज की ही देन थी। आर्य समाजी नेता बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय ने भारतीयो मे स्वदेशी शिक्षा की एक नई जागृति पैदा करते हुए अंग्रेजो से लड़ने का एक महत्वपूर्ण हथियार दिया। रास बिहारी बोस ने आगे चलकर कैप्टन मोहन सिंह के साथ मिल कर आजाद हिंद फौज की स्थापना करने मे बहुत बड़ा योगदान दिया। आर्य समाजियों को पता था कि विदेशो शासको को भगाने के लिए स्वदेशी व विदेशी ताकतो का सहयोग होना बहुत जरूरी है।

शिक्षा के क्षेत्र में महर्षि दयानंद के नाम से आर्य समाजियो ने दयानंद ऐंग्लो वैदिक संस्थानों की शुरूआत की जिसमे विदेशी संस्कृति को समझने के लिए अंग्रेजी के साथ–साथ संस्कृत पर भी उतना ही जोर दिया गया ताकि विदेशी भाषा के साथ–साथ देशी भाषा को माध्यम बनाकर लोगो के बीच प्रचार–प्रसार किया जा सके। डी.ए.वी. संस्थाऐ आज की पूरे देश मे शिक्षा के बड़े माध्यम बने हुए हैं। जो बच्चों मे संस्कार के साथ–साथ शिक्षा का भी प्रचार कर रहे हैं।

संदर्भ सूची

[1]. डॉ नवदीप कुमार, क्रांतिसूर्य महर्षि दयानंद व उनके विलक्षण कर्मयोगी, पृष्ठ 48-93
[2]. स्वामी दयानंद सरस्वती: सत्यार्थ प्रकाश, पृष्ठ: 214, 321
[3]. राधा कुमार: स्त्री संघर्ष का इतिहास, पृष्ठ 71-73
[4]. बी एल ग्रोवर, यशपाल : आधुनिक भारत का इतिहास, पृष्ठ: 274-276
[5]. डॉ के एम मालती, स्त्री विमर्श, भारतीय परीपेक्ष्य, पृष्ठ 31
[6]. डॉ जितेश नागोरी व कांता नागोरी, भारत के स्वतंत्रता सैनानी, पृष्ठ 38-43
[7]. चोपड़ा, पुरी, दास : भारत के सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास, भाग 3, पृष्ठ 116-118
[8]. लाला लाजपत राय, "ए हिस्ट्री ऑफ़ द आर्य समाज", पृष्ठ 44-45
[9]. कीनेथ जोंस, "आर्य धर्मा", पृष्ठ 138
[10]. डी वैबल, "द आर्य समाज", पृष्ठ 110-111
[11]. aryageet.blogspot.com
[12]. aryasamajmandirlko.com/prakriya.aspx
[13]. http://yuvashakha.weebly.com/blog/